अधिनायकवाद के विरुद्ध हुए संघर्ष में जिसने साहस और बलिदान का परिचय दिया, हताश और थके हुए विपक्षी नेतृत्व को सत्ता के सिंहासन पर आरूढ़ करने में अपना योगदान किया, वही युवा पीढ़ी आज फिर से अपने पथ से भटक गई है। योग्य रचनात्मक नेतृत्व के अभाव में वह पुनः निरुद्देश्य आंदोलन, उछृंखलता और विध्वंस के पथ पर बढ़ रही है। युवा-पीढ़ी की कर्मशक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाना है तो उसके सामने प्रत्यक्ष आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। युवा-पीढ़ी को यह विश्वास दिलाना होगा कि राजकाज के लिए सत्ता ही सर्वस्व नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने अपने 20 अप्रैल 1978 के वक्तव्य में विनम्रतापूर्वक सुझाव दिया था कि इस आत्मघाती दिशा को नया मोड़ देने के लिए कुछ वरिष्ठ एवं प्रभावशाली राजनेताओं को स्वेच्छा से सत्ता छोड़कर रचनात्मक कार्य का ठोस उदाहरण युवा-पीढ़ी के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहिए। विगत 30 वर्षों के अनुभवों के प्रकाश में अब हमें उपर्युक्त कटु सत्य को सार्वजनिक रूप में और खुले मन से स्वीकार कर, आत्मविश्वास तथा दृढ़ निश्चय के साथ रचनात्मक कार्यशैली के विकास में जुट जाना चाहिए। जनमानस तीव्रता से अनुभव कर रहा है कि उसे अब आन्दोलनात्मक या जोड़तोड़ में प्रवीण नेतृत्व की नहीं — रचनात्मक प्रवृत्ति के एवं रचनात्मक प्रयोगों की अनुभूति की भट्ठी में पके नेतृत्व की आवश्यकता है। अतः हमें रचनात्मक कार्यप्रणाली का ही अवलंबन करना होगा। यह कार्यप्रणाली समाज में से रचनात्मक प्रवृत्ति के युवा नेतृत्व को आकर्षित कर सकेगी। आज यही देश की आवश्यकता है।

मेरा संकल्प

यहाँ प्रश्न खड़ा होता है कि आज की स्थिति में इस कठिन दायित्व को कौन संभाले? लोकनायक के स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति को देखते हुए उन पर यह बोझ डालना उनके प्रति अन्याय होगा। लोकनायक के आदर्शों के प्रति सच्ची आस्था रखने वाले लोगों को ही अब यह दायित्व ग्रहण करना और अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर उनके जीवन काल में ही रचनात्मक लोकशक्ति के निर्माण के उनके स्वप्न को साकार करना होगा। यह स्मरण कर मुझे बड़ा गर्व और संतोष का अनुभव होता है कि लोकनायक के समग्र क्रान्ति के आह्वान की ओर सर्वप्रथम आकर्षित होने वाले मुट्ठी भर राजनीतिक कार्यकर्ताओं में मैं भी एक था। अनेक वर्षों से चुनाव राजनीति की प्रक्रिया का अभिन्न अंग होने के बाद भी समग्र क्रान्ति के आह्वान की ओर अपने आर्कषण का मूल खोजने की दृष्टि से जब मैं अपने अतीत को टटोलने की कोशिश करता हूँ तो मुझे दिखाई देता है कि जिस संगठनात्मक प्रक्रिया के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में मेरा प्रवेश हुआ था वह मूलतः रचनात्मक तथा उदात्त जीवन मूल्यों के आधार पर सर्वाङ्गीण राष्ट्र निर्माण के एकमेव लक्ष्य से प्रेरित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1950 में मैंने यदि राजनीति में प्रवेश किया तो स्वयं चुनाव लड़कर सत्ता प्राप्त करने के हेतु से नहीं, अपितु राजनीति और राजसत्ता को राष्ट्र निर्माण का रचनात्मक माध्यम बनाने के प्रयत्नों में अपना विनम्र योगदान देने की इच्छा से। मार्च 1977 में पहली बार मुझे श्रद्धेय जे० पी० के आदेश के कारण चुनाव के मैदान में उतरना पड़ा। वह भी आपातकालीन अधिनायकवाद के द्वारा उत्पन्न आतंक और भय की चुनौती को स्वीकार करने की विवशता के कारण ही।

वर्तमान राजनीतिक कार्य प्रणाली का 28 वर्ष तक अंतरंग परिचय प्राप्त कर लेने के पश्चात् अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि प्रचलित राजनीति के माध्यम से न तो रचनात्मक नेतृत्व का उभरकर आना संभव है और न राजसत्ता का रचनात्मक उपकरण बन पाना। इसके हल के लिए वर्तमान दलगत राजनीतिक कार्यप्रणाली के स्थान पर किसी वैकल्पिक रचनात्मक कार्यप्रणाली की खोज करनी होगी। अपनी अल्पक्षमता और दुर्बलताओं से अवगत होते हुए भी मैं अपनी शेष आयु को इस खोज कार्य के लिए ही समर्पित करने की